मीरा की भक्ति: गिरधर गोपाल का प्रेम

Mamta Tiwari

नन्ही मीरा ने जब अपनी माँ से अपने दूल्हे के बारे में पूछा, तो माँ मुस्कुराते हुए श्री कृष्ण की मूर्ति की ओर इशारा कर दिया। उसी क्षण मीरा के बाल मन में गिरधर गोपाल की छवि बस गई और उन्होंने कृष को ही अपना सब कुछ मान लिया।

बड़ी होने पर मीरा राजसी ठाठ-बाट के बीच भी कृष्ण की भक्ति लीन रहती थीं। वे घंटों मंदिर में बैठकर भजन गातीं और अपने आराध्य चरणों में आँसू बहातीं, मानों संसार की उन्हें कोई सुध न हो।

मीरा का विवाह मेवाड़ के राजकुमार भोजराज से हुआ, लेकिन उनका मन तो वृंदावन की कुंज-गलियों में भटकता था। महलों की दीव के भीतर भी उनकी आँखों में केवल सांवरे की मूरत बसी रहती थी और खुद को कृष्ण की दासी मानती थीं।

राजपरिवार को मीरा का साधु-संतों के साथ बैठना और मंदिरों
लोक-लाज छोड़कर नाचना बिल्कुल पसंद नहीं था। दुनिया की परवा
किए बिना, मीरा निर्भय होकर अपने इकतारे पर कृष्ण के गुणगान कर
रहीं।

राणा ने मीरा की भक्ति को कुल की मर्यादा के खिलाफ मानकर उन्हें मारने के लिए विष का प्याला भेजा। मीरा ने 'गोविंद' का नाम लेव मुस्कुराते हुए उसे पी लिया और वह घातक विष भगवान की कृपा से अमृत बन गया।

एक बार टोकरी में एक विषैला सर्प छिपाकर भेजा गया ताकि मी को डस ले, लेकिन जैसे ही मीरा ने उसे छुआ, वह फूलों की सुंदर माल में बदल गया। भगवान कृष्ण ने हर कदम पर अपनी अनन्य भक्त की र की।

अंत में मीरा ने राजमहल के वैभव का पूरी तरह त्याग कर दिय
और गेरुए वस्त्र धारण कर वृंदावन की ओर निकल पड़ीं। उन्होंने ऊँच
स्वर में गाया कि 'मेरे तो गिरधर गोपाल, दूसरो न कोई', और सांसारि
बंधनों को सदा के लिए पीछे छोड़ दिया।

Generated By www.genstory.app

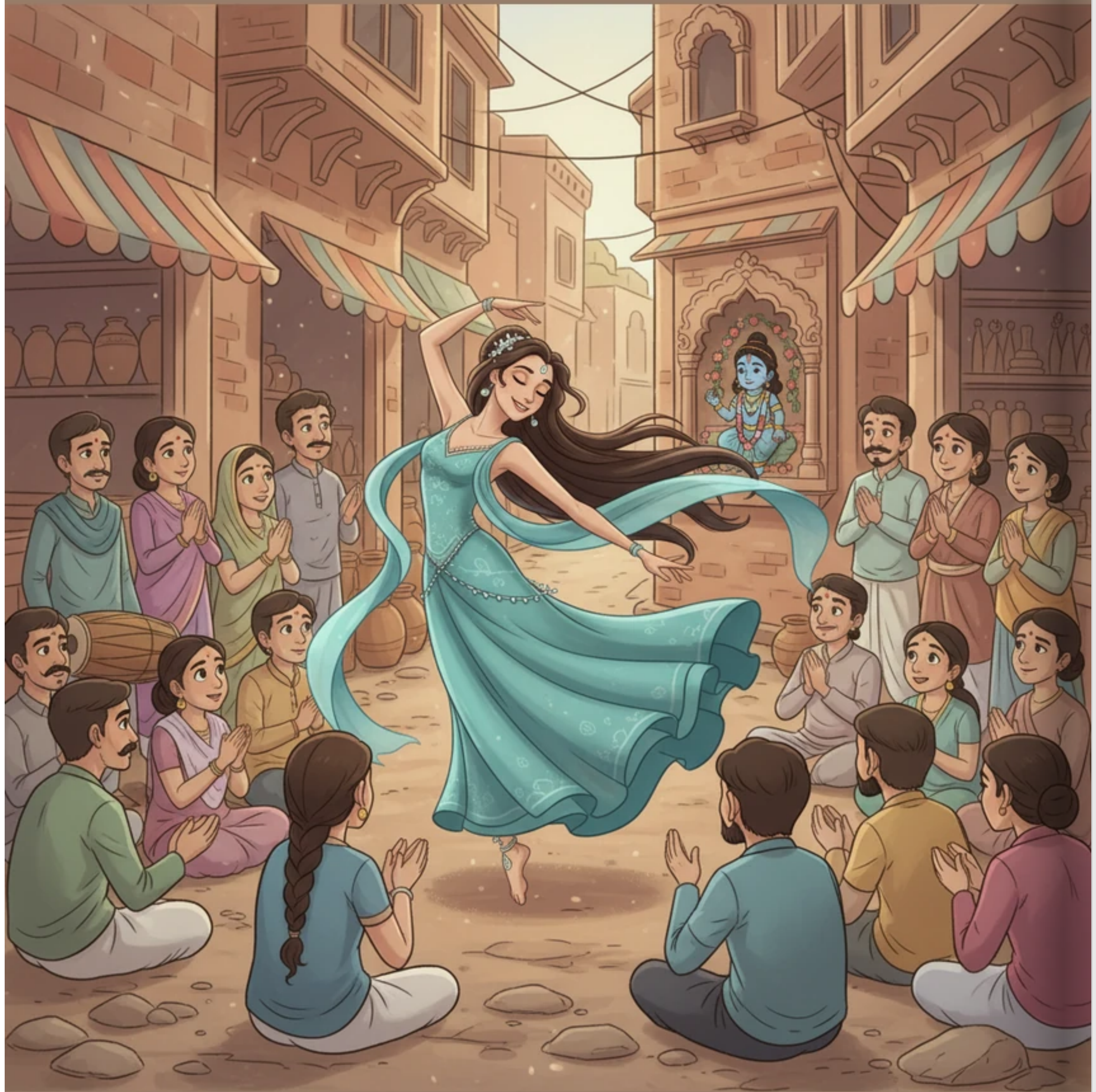

वृंदावन की गलियों में मीरा के भजनों की गूँज चारों ओर सुनाई दे लगी, जहाँ भक्त उनकी निस्वार्थ भक्ति देखकर भाव-विभोर हो जाते थे धूल और धूप की परवाह किए बिना, वे केवल अपने श्याम की छवि क निहारती रहती थीं।

अपनी आध्यात्मिक यात्रा के अंतिम पड़ाव में मीरा द्वारका पहुँचीं, जहाँ वे रणछोड़ जी के मंदिर में दिन-रात कीर्तन करने लगीं। उनकी आत्मा अब पूरी तरह से अपने प्रियतम परमात्मा में विलीन होने के लि व्याकुल हो उठी थी।

मंदिर के गर्भगृह में कीर्तन करते-करते मीरा अचानक भगवान क
मूर्ति के भीतर समा गईं और भौतिक जगत से ओझल हो गईं। पीछे के
उनकी पीली चुनरी रह गई, जो इस बात का प्रमाण थी कि सच्ची भक्ति
अंततः भक्त को भगवान से मिला देती है।